संगीत- गायन में स्नातक(बी0ए0)

उद्देश्य *- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय संगीत के मूलभूत तत्वों, गायन शैलियाँ, पाठ्यक्रम के रागों एवं प्रसिद्ध गायकों के जीवन से अवगत कराना है तथा पाठ्यक्रमानुसार गायन के प्रयोगात्मक पक्ष की शिक्षा प्रदान करना है।*

द्वितीय सेमेस्टर कोर कोर्स का पाठ्यक्रम

क्र0 सं0	कोर्स शीर्षक	कोर्स कोड	अंक	श्रेयांक
1	**भारतीय संगीत का परिचय II - गायन एवं प्रयोगात्मक**	**BAMV(N)-102**	**100**	**4**
प्रथम खण्ड	**भारतीय संगीत का परिचय II - गायन**		**50**	**2**
	इकाई 1- भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास।			
	इकाई 2- परिभाषा (ध्वनि, नाद, आन्दोलन संख्या, मींड, कण, सूत, खटका, गमक, घसीट, कृन्तन, मुर्की)।			
	इकाई 3- गायन शैलियों का संक्षिप्त परिचय (ध्रुवपद, धमार, ठुमरी, टप्पा, दादरा एवं होरी)।			
	इकाई 4- संगीतज्ञों का जीवन परिचय (पं0 ओमकारनाथ ठाकुर, उ0 फैयाज खाँ एवं पं0 भीमसेन जोशी)।			
	इकाई 5- राग भैरव एवं भूपाली का परिचय तथा उनमें विलम्बित ख्याल एवं मध्यलय ख्याल को तानों सहित लिपिबद्ध करना; पाठयक्रम के रागों में ध्रुवपद दुगुन लयकारी सहित।			
	इकाई 6- पाठ्यक्रम की तालों एकताल एवं कहरवा ताल का परिचय तथा उनके ठेकों को दुगुन एवं चौगुन लयकारी सहित लिपिबद्ध करना।			
द्वितीय खण्ड	**प्रयोगात्मक**		**50**	**2**
	इकाई 7- राग भैरव का परिचय एवं स्वर विस्तार।			
	इकाई 8- राग भैरव में विलम्बित ख्याल, आलाप एवं तानों सहित।			
	इकाई 9- राग भैरव में मध्यलय ख्याल, आलाप एवं तानों सहित।			
	इकाई 10- राग भूपाली का परिचय एवं स्वर विस्तार।			
	इकाई 11- राग भूपाली में मध्यलय ख्याल आलाप व तानों सहित।			
	इकाई 12- पाठ्यक्रम के रागों भैरव एवं भूपाली में से किसी एक में ध्रुवपद दुगुन लयकारी सहित।			
	इकाई 13- पाठ्यक्रम के तालों एकताल एवं कहरवा की पढन्त एवं उनके ठेकों को दुगुन एवं चौगुन लयकारी में पढ़ना।			
	इकाई 14- पाठ्यक्रम सम्बन्धित मौखिक परीक्षा।			

राग - भैरव एवं भूपाली | **ताल - एकताल एवं कहरवा**

नोट- पूर्व सेमेस्टर के पाठ्यक्रम (प्रयोगात्मक) की पुनरावृत्ति